गीता का भगवान कौन?

श्री मत भगवत गीता स्वयं परमपिता परमात्मा के श्री मुख कमल द्वारा उच्चारित महावाथ्यों का संग्रह है संसार में अन्य कोई भी शास्त्र अन्य कोई ऐसी पुस्तक प्राप्त नही है, जिसमें उपदेश कर्ताओं ने अपने लिए परमात्मा य सृष्टि का रचयिता तथा विश्वकर्ता कहा हो,

गीता ज्ञान ही के बारे में प्रसिद्ध है कि इसके धारण करेन से नर से श्री नारायण पद और नारी श्री लक्ष्मी का पद प्राप्त होती है। स्वयं गीता में भगवान वाच है कि तुम मेरी शरण आ जाओ तो मै निश्चय ही तुम्हे सभी पापों से मुक्त कर परमधाम ले चलूंगा केवल गीता में ही इस बात का उल्लेख है कि इसके ज्ञान द्वारा दैवी सम्प्रदाय की स्थापना अर्थात मनुष्य देव पद को प्राप्त होगा गीता ज्ञान ही से स्वर्ग का स्वराज्य स्थापना होता है तभी तो आपने पूज्य बापू गांधी ने भी इस शास्त्र द्वारा राम राज्य स्थापना करेन की कोशिश की गीता की जन्म भूमि भारत वर्ष है जो समस्त विश्व का सर्वोत्तम तीर्थ है जहां परमपिता शिव ने अपना दिव्य अवतार लेकर जहां गीता ज्ञान की शंख ध्वानि की है।

झैसे परमात्मा सभी मनुष्यत्माओं का पारलौकिक परमप्रिय परमपिता है, वैसे ही उनके द्वारा ही उच्चारित महावाक्योंका पारलौकिक परमप्रिय 'श्रीमद्भगवद्गीता' सभी शास्त्रोंकी माता-पिता है, क्योंकि यही सबको सद्गतिमें ले जाती है और फिर आगे चलकर इसीसे सब शास्त्रोंकी उत्पत्ति होती है। जैसे भारत सभी भूमि खण्डोंमें सिरोमणि है, वैसे ही गीता सर्व शास्त्रायी पुस्तक है। भगवद्गीताको शिरोमणी- शास्त्र मान कर लोग गीता जयन्ती मनाते हैं परन्तु वह यह नहीं जानते कि वास्तवमें गीता जयन्ती हो परमात्मा ज्योतिलिंगम् शिव, सूक्ष्मआकारी देवता ब्रह्मा, विष्णु, शंकर तथा साकारी संगमयुगीय ब्राह्माणों की जयन्ती है कि परमात्मा और उनकी मुख्य रचना का दिव्य जन्म भी इस श्रीमत्भगवान ज्ञान- गीताके साथ-सथ हुआ है।

गीता ज्ञान द्वारा ही ब्रह्माने सच्चे ब्राह्माणों की रचना की। गीता ज्ञान ही रुद्र ज्ञान है। गीता ज्ञान के कारण ब्रह्मा और सरस्वती भी ज्ञानियों में सर्वश्रेष्ठ हुए और रुद्रज्ञान यज्ञके यज्ञपिता और यज्ञमाता कहलाये गीता ज्ञान द्वारा ब्रह्माने श्रीनारायण और सरस्वतीने श्री लक्ष्मी पद पाया।

आज सभी मनुष्य गीत को माता के नामसे पुकारते है परन्तु वह यह नहीं जानते कि पिता कौन है? भारतवासियोंने अज्ञानवश गीता में भगवानुवाच्च होते भी उसके मूल वक्त निराकार परमात्मा शिवकी जगह देवता श्रीकुष्णका नाम लिखदिया, यह धर्म ग्लानि ही कही जायेगी इसी कारण संसारके सभी धर्मों के लोग भी इसको आदरकी दृष्टि से नहीं देखते। एक निराकार परमात्माको तो सब धर्म वाले अपना पिता मानते हैं। श्रीकृष्णको तो वह मानते रहीं और न मानने की बात ही है। यदि उन्हें यह मालूम हो जाये कि यह ज्ञान उन सबके पिता परमात्माने दिया है तो वे उसे कितनी न मान्यता दें।

गीताका ज्ञान सर्वशक्तिमान् पतितपावन, परमपिता त्रिमूर्ति शिव ने दिया या जो सभी का रचयिता और जन्म मरणसे न्यारा है। हम श्रीकृष्ण व गीता प्रेमियों को स्वयं परमात्मा द्वारा प्राप्त दिव्य बुद्धि और अनुभवों तथा साक्षात्कारके आधारपर ही यह सत्य बताते हैं। श्रीकृष्ण तो सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसापरमोधर्म थे। उनका जन्म भी हुआ, किशोर, बाल्यवस्थयें भी भोगी और अन्तमें शरीरन्त भी हुआ। वास्तवमें श्रीमद्भगवद् गीतामें वर्णित ज्ञान तो मनुष्य सृष्टिके बीज रूप, ज्ञानसागर, शान्तिसागर, प्रेमसागर, आनन्दसागर, त्रिकालदर्शी, त्रिलोकीनाथ, दिव्यचक्षुविधाता, पतितपावन, परमपिता परमात्मा ज्योर्तिलिंगम्म् शिवने कलियुगके अथवा सतयुगके आरम्भ (संगम -युग) में दिया था। जो जनन मरणके न्यारे, अकालमूर्त और अयोनि है।

निराकार परमात्माको सभी आत्माओंका परमपिता कहते हैं। मनुष्य शरीरोंमें जितनी भी आत्मायें व्यक्त हैं वे सभी उनकी सन्ताने हैं, उनको ज्ञान, पवित्रता, सुख और शान्ति परमात्मासे हा प्राप्ति होती है। श्रीकृष्ण तो माता देवकी और पिता वासुसेवके पुत्र थे, अतः उनको जगतका माता- पिता या जगतगुरु नहीं कहा जा सकता। भगवानका तो जन्म दिव्य और अलैकिक होता है। साधरण मनुष्यात्माओंके समान वे माताके गर्भसे जन्म न लेकर एक साधारण वृद्ध-तनका आधार लेकर उनमें प्रवेश करके प्रायः लुप्त हुए सहज ज्ञान और सहज योगकी पुनः शिक्षा देते हैं, जिसका नाम पड़ता है प्रजापिता ब्रह्मा।

परमात्मा मनुष्य- सृष्टि रूपी वृक्ष के अविनाशी बीजरुप हैं जो कि सूर्य, चांद और तारागण के प्रकाश अपार ब्रह्मालोक यां परमधाममें निवास करते है। श्रीकृष्णने कोई धर्म की स्थापना या अधर्मका विनाश कर्तव्य नहीं किया, यह दो कार्य तो परमात्मा स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा तथा शंकर द्वारा करवाते है।

'सर्वधर्मान् परित्येज्ज मामेकं शरणं व्रज' गीताके महावाक्यों में इस शिक्षाप्रद महावाक्यका बहुत ही महत्व है। स्पष्ट है कि यह महावाक्य किसी मनुष्य या देवताके नहीं हो सकता। परमात्मा जो सब धर्मोंकी मनुष्यात्मों का अविनाशी परमपिता हैं, देह सहित देहके सभी धर्मोंको त्यागने और उनमें बुद्धियोग लगाने की आज्ञाकर सकता है। वैसे भी श्रीकृष्णके जीवनकालमें सभी धर्म तो कलियुगके अन्तमें ही होते हैं। परमात्मा ही जब ब्रह्मातनमें अवतरित होकर सभी मनुष्यात्माओंको यह शिक्षा देते हैं और उन्हें कलियुगी, आसुरी सृष्टि के भावी महाविनाशका दृश्य भी दिखाते हैं जिसका वर्णन गीतामें भी है। यदि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने दिया होता या परमात्मा श्रीकुष्ण देते या उनके देवताई तनमें अवतरीत हुए होते तो अर्जुनके यह वाक्य न होते कि ' हे भगवान! णुझे अपने दिव्यरूपका साक्षात्कार कराओ' क्योंकि श्रीकृष्ण तो स्वयं ही अति सुन्दर, मोहिनीरूप थे।

यदि पामात्मा श्रीकृष्ण, जो कि सुन्दरता, दिव्यगुणों और आत्मिक शक्तिके दृष्टिकोणसे सम्पूर्ण देवता थे, के तनमें अवतरित होते तो संसार में ऐसा कोई भी मनुष्य न होता जो कि परमात्माको पहचान न सकता और जो उन्हें तुच्छ समझता।परन्तु गीतामें तो महावाक्य हैं कि 'करोड़ों में से कोई विरला ही मनुष्य मुझे पहचानता है और मेरा अवतरण साधारण तनमें हुआ होनेके कारण अनेक मूढ़मती लोग मेरेको तुच्छ समझते हैं।

इस प्रकार इस गीता के सच्चे एवं वास्तविक पति त्रिमूर्ति पामात्मा शिवके बजाय श्रीकृष्णका नाम गीता के रचयिताके रूपमें लिख देनेसे बहुत भारी अनर्थ हुआ, जिससे ही भारत सिरताजसे कंगाल एवं दुखी बन पड़ा है अब गीता ज्ञान तो सर्वशक्तिमान्, ज्ञानसागर, परमात्मा शिवने ब्रह्मा तन द्वारा कलियुग के अन्त और सतयुगके आदिके संगमपर दिया था, जिससे पत्थर बुद्धि सदृश आत्मायें ज्ञानअमृत पीकर पारसबुद्धि बने थे। गीता ज्ञानकी आवश्यकता ही कलियुगके अन्तमें होती है, क्योंकि उस समय ही संशनका प्रयः लोप हो चुकता है और सतयुगका प्रारम्भ होना होता है। उस समय मनुष्यात्मायें पृथ्रीपर आ गई होती हैं और तमोगुण की भी प्रधानता होती है।

यही कारण है जो जन्म जन्म मनुष्यात्माएं गीता सुनते सुनाते दुर्गतिमें ले जाते हैं और परमात्मा शिव जब आकर गीता सुनाते हैं तो सद्गतिमें ले जाते हैं जिससे भारत फिर से कंगाल से सिरताज बनता है। वास्तव में गीता जयन्ती ही शिव जयन्ती है। गीता जयन्ती ही हीरे तुल्य है और बाकी जयन्तियां कौड़ी तुल्य हैं।

शिवरात्रि-: शिव है सुखकारी परमात्मा का नाम जब कि गीता के अव्यक्तमूर्त भगवान (शिव) के महावाथ्य है कि मै इस व्यक्त सृष्टि के पार महद ब्रह्मा (अखण्ड़ ज्योति महातत्व) में निवास करता हूं जहां सूर्य चांद इत्यादि का प्रकाश नही पहुंच सकता तब उसके लिए रात्रि कैसे? फिंर फाल्गुन कृष्ण चर्तुदशी ही की रात्रि को शिवरात्रि मनाने का क्या महत्व है?.

रात्रि का अर्थ-: रात्रि के समय अंधकार होता है लोग प्रायःसो जाते हैं उस समय तमोगुण की प्रधानता होती है भूत चारे, उल्लू जैसे जीव ही रात्रि को विचरते हैं इस कारण इनको तथा राक्षसों को रात्रिचर तथा निशिचर कहा जाता है, अब अज्ञान को भी अंधकार की उपमा दी जाती है अशान्त आत्मा को भी सोई हुई आत्मा, विकारों रूपी भूतो के वश हुई आत्मा अथवा असुरी आत्मा कहा जाता है। अतः जिस युग मे मनुष्यों में तमागुण की प्रधानता और धर्म की ग्लानी है अधोगति का वह समय ही रात्रि है फाल्गुन का मास चौथा वदी वर्ष का अंतिम मास होता है और कृष्णपक्ष की चर्तुदशी को पूर्ण अंधकार होता है उसके पश्चात शुक्ल पक्ष का आरम्भ होता है और कुछ ही दिनों के बाद नया संवत प्रारम्भ होता है अतः रात्रि की तरह फाल्गुण की कृष्ण चर्तुदशी भी आत्माओं के अशान अंधकार ... विकार अथवा आसुरी लक्षणों की पराकाष्ठा के अंतिम चरण की बोधक है। इसके पश्चात आत्माओं शुवलपक्ष अथवा नया कल्प प्रारम्भ होता है अर्थात अशान और दुख के समय अंत होकर पपित्रता तथा सुख का समय शुरू होता है

शिवरात्रि उपरोकत विचाररो के अनुसार शिवरात्रि वास्तव में कलियुग के अंत और सतयुग के आरम्भ के समय का स्मरणोत्सव है क्योकि कलियुग के अंत में तमोगुण आसुरी लक्षण, अज्ञान अंधकार आदि प्रबल होते हैं और उसके बाद सतयुग से पवित्रता, सतोगुण इत्यादि की शुरूवात होती है और नया कल्प का चक्र चलता है।

अब विचार की बात है कि कलियुग का अंत अथवा विनाश और सतयुग की स्थापना करने निमित्त कौन महाशत्शिाली है? अर्थात सारी सृष्टि के अज्ञान अंधकार का विनाश कर ज्ञान द्वारा पवित्रता, सुख- शन्ति देने का निमित्त कौन? ज्ञान- सूर्य अथवा शान्तिदाता- सुखदाता है। इन दोनो का उत्तर होगा "कल्याण कारी परमात्मा यानी शिव ". अतःसंधि समय रूपी कहारात्रि का संबंध शिव से जोड़ा जाता है शिव की याद में फाल्गुण चर्तुदशी मनाने का यही रहस्य है

'शिवरात्रि के महत्व एक दूसरी रीति से भी निर्धारित किया जा सकता है शिव का अर्थ है विश्वहीत कारी, विश्वकल्याण करने के लिए परमपिता परमात्मा तीन कर्तव्य करते हैं... ...

१- ज्ञान द्वारा सत्यता, पवित्रता और शानित स्थापना इसे गीता में भगवान द्वारा ३" धर्म की पुर्न स्थापना कहा जाता है

२- असत्यता, अपावित्रता तथा अशान्ति का विनाश गीता के शब्दों में इसे २' अधर्म का अभ्युत्थान' कहा जाता है

३- धर्म परायण योग-युक्त, पवित्र आत्माओं का संरक्षण, पालन तथा उसकी स्मृति-वृद्धि इसे गीता के अनुसार भगवान द्वारा ३"क्षेम बहाना३" कहा जा सकता है।

अब स्पष्ट है कि परमात्मा असत्यता तथा आसुरी लोगों का विनाश तभी करेंगे जब असत्यता, तमोगुण की प्रधानता इत्यादि लक्षण सृष्टि में प्रबल हो चुकी हो, मनुष्य अपनी पुरूषार्थ द्वारा, आत्मिक उन्नति प्राप्त करने में पूर्ण असमर्थ हो और सताप्रधान समय प्रारम्भ होने का समय आपहुंचा हो इसी प्रकार सत्यता, पवित्रता,दैवी गुणों तथा धर्म की पुर्न स्थापना भी परमात्मा तभी करेंगे जब की कलियुग का अंत होने का कारण ये सत्तायें प्रायः लुप्त हो चुके हो और सतयुगी सृष्टि की पुनः स्थापना का समय हो अर्थात परमात्मा शिव ये दोनो कार्य कलियुग के अंत और सतयुग के प्रारम्भ के संधि समय करते हैं अतः उसकी ही याद में शिवरात्रि महोत्सव मनाया जाता है क्योकि सुख पहुंचाने वाले की याद मनायी जाती है।

शिवरात्रि त्रिमुर्ति परमात्मा जन्मोत्सव है

अब ज्ञान द्वारा सतयुगी सृष्टि की स्थापना के लिए परमात्मा ज्योर्तिलिंगूम शिव संधि समय आदि देव ब्रह्मा के व्यक्तित्व में प्रविष्ट होते अर्थात अपने परमधाम से अवतरित होते हैं। ब्रह्मा रूप

द्वारा ज्ञान देने के कारण ही परमात्मा को बृहस्पति अर्थात मनुष्यों को देवता बनाने वाला जगत गुरू भी कहा जाता है और सोमनाथ भी इस कारण गीता के भगवान के महावाक्य हैं कि ३३"प्रजापिता ब्रह्मा ने ज्ञान यज्ञ द्वारा प्रजा रची थी वे इस कारण ही शास्त्रवादीयों का कथन है कि ईसा संहिता के अनुसार शिवरात्रि, वह रात्रि है ".जब कि आदि देव में कोटि-कोटि सूयों के समान तेज वाले लिंग ने रूप धारण किया था

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर यूं कहिये कि शिवरात्रि वास्तव में संधि समय आदिदेव ब्रह्मा के तन में शिव के अवतरण अथवा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर नाम के त्रिदेव रचे जाने का स्मरणोत्सव है। परन्तु खेद है कि वर्तमान समय कलियुग का अन्त होने के कारण अब जनता को यह मालूम नहीं कि शिवरात्रि परमात्मा के जन्मोत्सव का दिन है। अन्यथा इस सर्वोत्तम उत्सव को सारी दुनिया के लोग धूमधाम से मनाते।

शिवरात्रि पर जाग्रण-:

उत्सव के दिन भक्तजन रात्रि को जागते हैं। वे समझते है कि इसका बड़ा महत्तम है। परन्तु उन बेचारों को यह मालूम ही नहीं कि शिवरात्रि आत्माओं की अज्ञान- रात्रि का नाम है और आत्माओं की ज्ञान द्वारा आध्यात्मिक जाग्रति से ही लाभ हो सकता है। अतः शिवरात्रि को मनाने की युक्तियुक्त विधि यह है कि कलियुग के अंतिम चरण रूपी वर्तमान रात्रि में परमात्मा शिव से आदिदेव ब्रह्मा रूप द्वार दिया हुआ ज्ञान प्राप्त किया जाय जिससे कि आत्मा में जाग्रति रहे।

शिवरात्रि पर नशा

ळोग तो शिव और शंकर में अंतर नहीं समझते। शंकर जी के विषय में यह जानकर कि वह ''मस्त मौला'' ''मस्ताना योगी'' है, वे स्वयं भी मस्त बनने का प्रयत्न करते है। परन्तु, वर्तमान अधोपतन के समय अशानी लोग मस्ती लाने के लिये इस दिन खूब भंग, चर्स, गांजा, इत्यादि घोट- घोटकर पीते हैं। बेचारों को यह तो मालूम नहीं कि यह नामखुमारी ज्ञानामृत चखने से चढ़ती है न कि भंग आदि पीने से।

शिवरात्रि को उपवास

उपवास का वास्तविक अर्थ है समीप बैठना, संग, करना, युक्त होना। परमात्मा से युक्त होने के लिए पहले मन से दृढ़ संकल्प अथवा व्रत धारण करने की आवश्यकता है। अतएवं कलियुग के अन्त में गोप- गोपियां गीता के भगवान शिव द्वारा ज्ञान को धारणा से निर्विकारी बनने का व्रत (उपवास) लेते हैं तथा (सारी संधि समयरूपी) महारात्रि की आध्यात्मिक जाग्रणा करते हैं। परन्तु आज जन- साधारण जैसे ''रात्रि'' का रूढ़ि अर्थ लेते है, वैसे ही शिवरात्रि को भी स्थूल रीति मनाते हैं।

शिवरात्रि मनाने की युक्ति- युक्त रीति

अब, जब कि कलियुग का अन्तिम चरण होने के कारण आध्यात्मिक दृष्टिकोण से शिवरात्रि का समय है तो स्वयं परमात्मा शिव से ब्रह्मा रूप द्वारा प्राप्त हो रहे ज्ञान की धारणा से पवित्रता का व्रत ले आत्मिक ज्योति को जाग्रत रखना, मैलाई (ईश्वरीय) मस्ती में मस्त रहना हो शिवरात्रि को मनाने की युक्ति- युक्त और लाभकारी विधि है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com